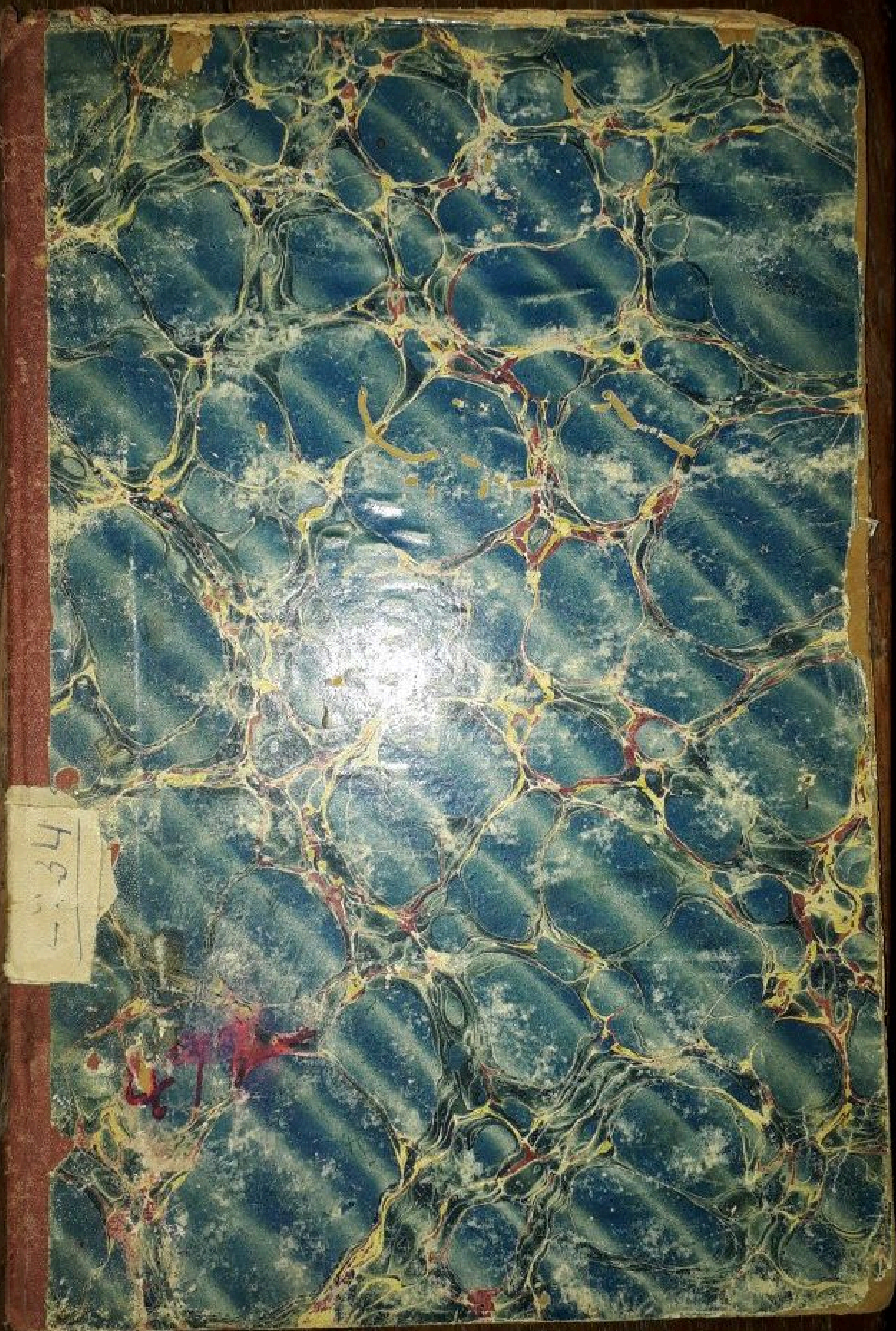


र्ण ढाक भस्मको पानीमें मिलाकर पीनेसैं शांतिहोताहै ३२

निम्बूफलेनाप्यथवोषणेनकोऽसौ
बुनावाघृतमेतिपाकम् तिलादि
तैलान्यपिकांजिकेन सर्जस्यभल्ला
पनसाम्लकैः॥३३

अर्थ- घृतका अजीर्ण नींबू अथवा मिरच अथवा गरमशीतलजलसैं पचैहै तिलसैं आदिसैं सबतेलोंका अजीर्ण कांजीसे पचताहै कटहरऔरआमलेका अजीर्णसंखुआसेपचै है·

किमत्रचित्रंबहुमांस मत्स्यभोजी
सुखीस्यात्परिपीतमद्यः इत्यद्भु
तं केवलवह्निपक्वमांसेनमत्स्यः
परिपाकमेति३४॥

अर्थ· बहुत मांस और बहुत मच्छी खाने वाला मनुष्य मद्यपान करनेसैं सुखीहोय यह आश्चर्य नहीहै परंतुकेवल आंच मेपका मांस अर्थात् कबाब सैं मच्छलीका अजीर्ण पचताहै यह बड़ा आश्चर्यहै॥३४॥

कपोतपारावतनीलकंठकपिं
जलानांपिशितानिजग्ध्वा का
सस्यमूलंपरिपीय पिष्टसुखीभ·
वेन्नोबहुशोऽनुभूतम्॥३५॥

अर्थ· कबूतर और परवा कबूतर मोर सुपेद तीतर इनके

मांस खानेसैं प्रगट अजीर्णमेंकासकीजडकोजलमेंपीसकरपीनेसैंदूरहोताहै यहप्रयोगहमारा अनुभूतहै अर्थात् अजमायाहै

व्योषैरसालासुरभीपयस्तुमंडेन
कोष्णेन विपाकमेति शंखस्यचू
र्णे नह्यादिनारीपयोदधिक्षिप्र
मुपैतिपाकं३६

अर्थ· सिखरिणी का अजीर्ण त्रिकुटा (सोंठ मिरच पीपर) सैं पचताहै और गौके दूधका अजीर्ण चौगुणेजलयुक्त मंड शीतल और गरमसैं पचताहै भातकेपानीको मंड कहते हैं तथा खुरवाले घोडासैं आदिसे सबपशुओंकादूध औरदही का अजीर्ण शंख चूर्णसैं पचताहै॥३६॥

वटोवेसवाराल्लवंगेनफेनीश्रामे
पर्पटः शिग्रुबीजेनयाति करा
मूलतोलड्डुकापूपपाहाविपा·
कोभवेच्छष्कुलीमंडयोश्च॥३७॥

अर्थ· उरद मूंगकी पकोडी घृतमें अथवा तेलमेंबनीहोय सोमद्य विशेषसैं परिपाकहोय फेनी लौंगसे पचै· पापड सहजनेके बीजसैं पचै लड्डू पुआ बाबर आदिसैंबनीकढी आदिसमस्त का अजीर्ण और पूरी मांडाइत्यादिका अजीर्णपीपरामूल के खानेसैं नाशहोताहै॥३७॥

श्वाविड्गोधाशल्लकीचित्तलाद्या

ग्राविसीरात कोलकूमीदयोपि
जीर्येत्येवं पायसोमुद्गयूषात्साय
ह्वाद्धार नालं सुखाय ॥३८॥

अर्थ- पंचनखवाले जानवरोंका मांसजैसेगोह सेह रूरुऔर
रोजमूकर कछुआ मछलीसेंआदिले इनकेमांसका अजीर्ण
भेडकेदूधसैं पचताहैऔरखीर मूंगकायूषपानेसे पचती है
और सिरकेकाअजीर्ण ससुदूनोनखानेसे दूरहोताहै ॥३८॥

तप्तंतप्तंहेमवातारमग्नौ वारंवारं
क्षिप्तमंभस्तुतच्च पीत्वावश्यंदी
र्घकालोपपन्नमंभोजीर्णंशीघ्रमे
वं जहाति॥३९॥

अर्थ- सुवर्ण अथवा चांदीको वारंवार तपाकरजलमें बुझा
वैउसजलके पीनेसैं बहुकालकाजलकृतअजीर्ण शांतिहोई

पालंकिकाकेचुककारवल्लीवार्ता
कवंशांकुरमूलकानां उपोदिका
लावुपटोलकानांसिद्धार्थकोमे
घर वस्य पक्तौ: ॥ ४०॥

अर्थ- पालक छचाक जिसकोवालक स्यापकोछत्रीकहते
है करेला वेंगनवासके कोंपल मूली पोईकासाग मीठीतुम्बी
परवल चौराई इनसवका अजीर्ण सरसोंके सागखाने सें
॥ नष्टहोय॥४०॥

सुंठीसतीनस्यचनागरेणजंबीरयो:
कोदूवकोनिहंता जरासिराणोरकय
न्नाभ्यांमभ्येतिपाकंवहुधोद्भुतम्

अर्थ- मटरका अजीर्ण सोंठसें नष्टहोय जंभीरीनीवूनार
गी इनदोनों का अजीर्ण कोदोंअचसें पचे ये हमा निश्चे
यकराभयाहै ॥ ४१॥

पटोलवंशांकुरकारवल्लीपत्नान्य
लावुनिवहनिजग्ध्वा क्षारोदकं वृक्ष
नरोनिपीयभोक्तुपुनर्वाञ्छतितावदेव

अर्थ- परवल वांसकेकोंपल करेला मीठीतुंबी इनकेअजीर्ण
मेंपलास(ढाक)केक्षारकोजलमेंपीनेसैंतत्कालपरिपाकहोय
और उसीवक्तउतनाहीभोजनकरनेकी इच्छाहोय ॥४२॥

विपच्यतेश्वरणकोगुडेनतथालुकंतं
दुलतोयपानात् जंबीरनीरेणनिशार
सोनंसुलेनचूर्णंपरिपाकमेति॥४३॥

अर्थ- जिमीकंदकाअजीर्णगुडसैंपचे आलूकाअजीर्णचा
वलकेधोवनसैंपचै हलदीकाअजीर्णजंभीरीकेरससेंपचे ल
हसनकाअजीर्ण मोथाकेचूर्णसैं परिपाकहोय ॥४३॥

चंचूकसिद्धार्थकवास्तुकानां ग
यत्रिसारकथितेनपाक: शाका
निसर्वाणपुनयांतिपाकंक्षारेण

सपत्तिलनालजेन ॥४३॥

अर्थ- चूका सलो वथुआ इन्के खानेसें प्रगट अजीर्णरो रसार के काढेसैं परिपाक होय और सब साग मांस अजीर्ण तिल के खारसैं नाशहोय ॥४३॥

स्नेहाजीर्णरोगिणां मुद्गचूर्णज्वा·
लापक्वोहंतिवेरोचिकानो माषा
षडा निम्बिम्बमूलेनपाकं चिंचामु
चत्यम्लतो चूर्णयोगात् ॥४४॥

अर्थ- स्नेह कहिये· तेल· घृत· वसा· मुज्जा· इन्का अजीर्णमें मूं· गके चूर्णसे पचताहै विरेचकद्रुम खानेका अजीर्ण सिरकासें पचताहै उरदका अजीर्ण नीवूसें पचे इम्लीकोवहर के खारमें मिलानेसें खटाईका नाशहोय और पचे ॥४४॥

उष्णेनशीतेशिशिरेणचोष्णमम्ले
नचक्षारगणो गुणाय स्नेहेनती
क्ष्णवमनातियोगेसिताहितास्या
दितिकाश्यपोक्ति ॥४५॥

अर्थ- सरदीके रोग गरमऔषधसें नष्टहोय· औरगरमीकेरोग सरदऔषधतें नष्ट होय सबखारखटाईवस्तुसें गुणकारक होय तीखीमिरच आदिवस्तु घृततेल आदिसें गुणकारै औरवमनकारक औषधका अवगुन मिश्रीसे शांति होय ॥४५॥

ताम्बूलमध्यस्थितचूर्णकेनसद्

ग्धतेपस्य मुखेनरस्य तैलेनवाके
सुलकांजिकेन मुखायगंडूषम
सो विदध्यात् ॥४६॥

अर्थ- जिसमनुष्य का मुख पान के बीड़ा खानेसें फजरनेलगे अर्थात् चूने करके फटे वह तेल अथवा सिरकासेकुललाकरै तो आरामहोय ॥४६॥

शीतोदकंनस्यजरोगहारिनारीप
यश्चांजनरुग्विनाशि शालोदकं
धूमगदेमधुरस्तंथाच्चीविलेपोति
विरेचनोत्थे ॥४७॥

अर्थ- संघने के रोग शीतल जलसें नष्टहोय और अंजनसें प्रगटरोग स्त्रीके दूधसें नष्ट होय धूमपान अर्थात् हुक्कापी·नेकेरोग शालकेजलसें नष्टहोय और अतिदस्तोंका रोग आमरे के लेपसें नष्टहोय ॥४७॥

मृगस्यमांसंश्रमजेतुकूलंपवात
मुष्टिः सुरतावसाने क्षारोयणासें
धवताधितंतुच्छागांडभुक्तंसुरता
तिरेके ॥४८॥

अर्थ- डंड कसरतके करनेसें प्रगटजो ज्वरादिक सोमृगके मांस खाने सें नष्टहोय स्त्रीसंगके पिछाडी इवारा स्थान मे सोना अच्छाहै तथा स्त्रीसंग अधिक कराहोय उससें प्रगट

रोगमें जवाखार· पीपर· सेंधानोन· इनको मिलाकर पकाहु
आ बकरा का अंडकोश खाना हितहोय ॥४८॥

अवणा पूरणाजेतिलतैलतः ॥
अवणापूरणामेवसुखंविदुः ॥
कवलजेघुगदेष्ववधकारयेत् ॥
कवलमार्द्रकजंद्रवजंसुनः॥४६॥

अर्थ· कानमें तैलादिकडारनेसें प्रगटरोग येंरदूसरे तैल
डारनेसें शांतिहोय और ग्रासअर्थात् गस्साखाने के रोगपे
रअदरक रसयुक्त ग्रासखवाने सें नष्टहोय ॥४६॥

एर्वारु चीनारुकयोः फलानिक
ष्मांडकंचच पुसीफलंच निह
न्तिसद्यो ह्विकारजबीजं रसंतथा
वारुणि मेकमूलम् ॥५०॥

अर्थ· ककड़ी चेना आरुक जिसको पहाड़लोग वीर
सेन कहते हैं पेठा खीरा इनका अजीर्ण कंजाके बीज
के स्वरससें अथवा वरना की जड़ यह येकही पूर्वोक्त
अजीर्णका नाशकरैं ॥५०॥

क्षीकेशाम्बु निपीतमाशुहन्यात्
प्राचीनामलकंसपारिणमर्दम्·
शुंठीधान्यकवारि हंतिसद्य ॥
स्तात्तानामविकासजान्विकारान्

अर्थ· आमरा और कशेराइन दोनोंका अजीर्ण· खीके के
शपोवन जल के पीने सें शांति होय· और आम कारोगसों
ठ और धनियां के काढ़ेसें नष्टहोय ॥५१॥

मद्यपतिनहिमद्यजातुचेत्पीतम
द्यः पिबति घृतसमेतां शर्करामे
वसद्यः अपघन मधुकैला कुष्ठ
दार्वी लवालु प्रकटित कवलास्ये
मद्यगंधोः पिनस्यात् ॥५२॥

अर्थ· जो मनुष्य दारूपीवे और उसके ऊपर मिश्री मिला
कर घृत पान करैतो मद्य अर्थात् दारूका अमल नहीं चढ़ै और
नागरमोथा· मुलहटी· इलायची· कूठ· देवदारु· सुगंधवाले·
इनका चूर्ण मुखमें राखनेसें मुखमेंमद्यकीदुर्गंध नहींआवे ॥

कूष्मांडकस्यस्वरसोगुडेनपीतोम
दं कोद्रवजंनि हंति पयोनिपी
तं सितया समेत मुत्पचभूत्सुत्व
मया करोति ॥५३॥

अर्थ· कोदो अन्न का मद गुड़ और पेठ के स्वरस पीने सें
शांति होय और धातुक्षीण कार्श्यादिक रोग दूधमें मिश्री
मिलाय कर पीने सें दूर होता है ॥५३॥

घ्रात्वा शुकाक्षीं विपिनो पलेवासे
प्राश्यकिंचित पटुशर्करांम्वाशीता

मधु पीत्वा चुलकेनवापि प्रसह्य
पूगी फल मुन्नहा ति ॥५४॥

अर्थ- सुपारीका उन्माद थूकनेसे अथवा दूर्वा के सूंघने सैं नाशहोय अथवा थोड़ी सी चीनी भक्षण करनेसैं अथवा शीतल जल पीनेसैं नाशहोय सुपारीका उन्माद जब होताहै जब सुपारी कंठ में अटक जाती है ॥५४॥

एलार्द्र काम्भोधरचंदनानां चूर्णं
यथा पूर्व विवर्द्धितानां प्रचर्व्य
वक्त्रे धृत माशु हंति सुरारसोना
द्विज सुप्र गंधम् ॥५५॥

अर्थ- इलायची· अदरक· नागरमोथा· चंदनयह सबव स्तु क्रमसैं बढती लेय· अर्थात् इलायची ४ भाग· अदरक३ भाग· मोथा २ भाग· चंदन १ भाग· इनसबको कूटकर मुख· में धारण करणे सैं मदिराऔर लहसन इत्यादिक सर्व व स्तु की मुख दुर्गंध नाशहोय ॥५५॥

गुड मधु कांजिक तक्रविभागा:
स्युर्द्वि गुणास्तुयथोत्तरमेते त्रि·
णादि ना न्यथधान्ये शल स्यापि
न भे तद्धिषांति हि शक्तम्॥५६॥

अर्थ- गुड सहत कांजी· छाछ इनसब को क्रमसे द्वि गुणा· तलेय जैसे गुड़ सैं दूना सहत सहतसैं दूनीकांजीकांजी सैं दूनी छाछ इनसबको मिलाय एक पात्रमैं भरकर धान की राशि में धरदे इसको शुक्त कहते हैं ॥५६॥

शुक्तं मुक्त मपिपद्रहु भेदं हेतिसर्वं·
मिदमामजरोदं यन्मयागदितंमधु
शुक्तं तद्भिषग्भिरपपाचन मुक्तं॥५७॥

अर्थ- वैद्योंने शुक्त के अनेक भेद कहेहैं यह सबशुक्त· आमके रोग नाशक हैं परंतु इस ग्रंथमें जो मधुशुक्तकहा है इसको वैद्य पाचक कहतेहैं यह काशीराजकासिद्धांतहै

सैंधव त्रिकटु धान्यजीरकैदीप्ति
मीरज निशामठान्वित: पाचनो
जठराग्निदीपनो वेशवारउ·
दितोमनीषिभि:॥५८॥

अर्थ- सैंधानोन· सोंठ· पीपर· मिरच· धनियां· जीरा· अनार दाना· हरदी· और हींग· इनसबको कूटकर एकचकरनेसैं वेशवार नामका मसाला बनताहै यहमसालापाचन और दीपनहै ऐसें बुद्धमानवैद्यकहतेहैं॥५८॥

विश्वौषधचपलोषणसैंधवधान्य
कहिंगुराजीभि: करकाम्लाजिसुता·
भिर्गदितोसुनिभिस्तुवेसवारोयम् ५९

अर्थ- सोंठ· मिरच· पीपल· सैंधानोन· धनियां· हींग· राई· अनारदाना· अजमायन· इनको मिलानेसेभीवेशवारहोताहै

अनेकऋषिवाक्यैस्तु सारमादाय
यत्नतः दत्तरामेण रचिता संक्षि
प्ताजीर्ण मंजरी ॥ ६० ॥

अर्थ- अनेक ऋषियों के वाक्यों का सार ले दत्तरामने संक्षेप
में अजीर्ण मंजरी रचना करी ॥ ६० ॥

इति श्री माथुर वंशोद्भव पण्डि-
त कन्हैयालाल पाठकात्मज दत्त
रामरचित अजीर्णमंजरी समाप्ता ॥

अथ थोड़ी अजीर्ण नाशक औषध अपनी अनुभव-
करी मंदाग्नि पीड़ित मनुष्यों के हितार्थ लिखते हैं ॥ ६१ ॥

विश्वभेषजचूर्ण

विश्वभेषजं हिंगु टंकणं मागधी च-
सौवर्चलं त्विदं शिग्रपात्रजैर्भावितं
सैः शूलनाशनं क्षुत्प्रबोधनम् ॥ ६२ ॥

अर्थ- सोंठ-हींग-सुहागा-पीपल-सैंधानोन-इन सबको-
सहजनेकी रसकी भावना देकर अनुमान माफिक भक्षण करै
तो मंदाग्नि और शूल को नाश करै ॥ ६२ ॥

हरीतक्यादिवटी

हरीतकी हरितुल्य षड्गुणा चतुर्गुणा
चतुरविशाल पिप्पली चित्रकं वरद्व-
रैकसैंधवं रसापनं कुरु नृप वटि वह्नि

दीपनी ॥ ६३ ॥

अर्थ- छोटी हरड़ ६ भाग-पीपल-गजपीपल ४ भाग-चित्रक
१ भाग- सैंधानोन- १ भाग इन सबको मिलाय कूटकर नीबूके
रसमें गोली बनावै यह रसायन है सब रोगोंको दूर करै ॥

तक्रहरीतकी

तक्रेसुसंस्वेद्य शिवाफलानि तद्बीज
मुद्धृत्य च तैः शतेन षड्भुषणं च यव
क्षनिहिंगुसरावजाजीमजमोदकं च
देयं षडूषणादि खिवर्धभागगणं
प्रदेयमेतद्गालितस्य विभाव्य तुक्रे
सारस्ताम्यमीषां क्षिपेच्च बाबीजानि
कास्यगर्भे दृढे समस्त घर्मेषु विशो
ष्यता सां हरीतकी भक्षतमानवे
वेत् अजीर्णमंदानलजादराम्पया
न्स मूलशूलं ग्रहणीगुदांकुरान् हंहे
विबंधमानाह रुजो जयत्यसौ सआ
मवातां च भूता हरीतकी ॥ ६७ ॥

अर्थ- बड़ीहरड़ १०० ले उनको छाछ में औटा १ पीछे इन-
की गुठली निकालिये औषध भरे पीपर-पीपरामूल चव्य
चित्रक सोंठ मिरच काली दालचीनी सैंधानोन साम्हरनो-
न कालानोन खारीनोन कचियानोन हींग जवाखार सज्जीखार

जीरा अजमोद ये प्रत्येक १ तोला लेय और निसोत आधे तो
ला इन सब को कूटपीस वस्त्र में छान इसमें चूका की भावना
देकर पूर्वोक्त हाड़ों में भरे पीछे इन हाड़ों को घाम में सुखाय
कर धर राखे इसमें से १ टंक खाय तो इतने रोग दूर होंय अजी
र्ण मंदाग्नि उदर के रोग शूल संग्रहणी ववासीर बंधकोष्ट
अफरा और गुल्म वात इन सबका नाश करै इसको अमृतहरी
तकी कहते हैं ॥६७॥

वैश्वानर क्षार ॥

सुधार्कचित्रकैरंडलवणांश्च पुनर्न-
वं तिलापामार्गकदलीपलाशाति
तिणीतथा ६८ गृहीत्वा भस्मयेदेत
त्सर्वं भस्मा विलेपयत् जलाढके
विपक्वं तं पाद्यावशेषितः ६९
सुप्रसन्नं विनिःस्राव्य लवणोद्रस्य
संयुतं पक्वनिर्धूमकठिनाश्मसूक्ष्म-
चूर्णीकृतं पुनः ७० यवानीजीरक
ञ्च स्थूलजीरकहिंगुभिः पृथग्
द्विपलैरेभिश्चूर्णीकृतैर्विमिश्रयेत्
७१ आर्द्रकस्वरसेनापि भावयेच्चौष
धे पुनः शीतोदकेन तच्चूर्णं पिबेत्प्रात
र्हिमाश्रया ७२ तस्मिन्जीर्णे ऽन्नम

श्नीयाद्यूषैर्जांगलैर्जैरसैः द्वैपदम्यैः
सनवनीः सुखोष्णैर्वैहिदीपनैः ७३
एतेनाग्निश्च वर्द्धेत वलमारोग्यमे
व च तथानुपानं शस्तं हितं च वाभो
जने हितं ७४ मंदाग्न्यर्शोविकारेषु
वातश्लेष्मामयेषु च सर्वाङ्गशोफ
रोगेषु शूलगुल्मोदरेषु च ॥७५॥
आनाहे शर्करायां तु विषमूत्रानिल
रोगिषु

अर्थ- थूहर, आक, चीता, अरंड, नोन, सोन, तिल, ओंगा,
केला, ढाक, इमली, इन सबको भस्मकर इसकी भस्म २५६ तो-
ले लेय पीछे इसको १०२४ तोले जलमें औटावै - जबचौ-
था हिस्सा बाकी रहै तब उसको उतार छानले पीछे इसमें
६४ तोले नोन मिलाय कर फेर औटावै इसरीतिसे निर्धूम
कठोर औ सफेद क्षार प्रगट होय उस क्षार को लेकर बारीक पीसै
पीछे इसमें यह औषध और मिलावै अजवायन जीरा सोंठ
मिरच पीपर बड़ाजीरा हींग ये प्रत्येक २ तोले लेय इ
नको मिलाय इसमें अदरक के रसकी भावना देकर सुखाय
कर धर राखे हैं इसमें से प्रातःकाल बलके माफिक शीतल ज
लके साथ भक्षण करै जब यह औषध पच जाय तब वनके
जीवोंके मांसका रस तथा यूष थोड़ा स्निग्ध पदार्थ नोनको मिला

य कुछगरम कर और अग्निदीप्त करने वाले पदार्थ खा-
को देय तो अग्निबल आरोग्यता इनकी वृद्धीहोय इस
औषध खानेके पीछे छाछपीवै अथवा यह औषध भो-
जनके समय देनी उचितहै. मंदाग्नि-बवासीर-वात क-
फ-सबदेहकी सूजन-मूल-गोला-उदर के समस्त रोग-आ-
मवात-मल-मूत्र-संबंधी रोग-बादीकेरोग-इनको यह-
वैश्वानर नाम खार दूरकरता है ॥७५॥

{क्षारयोग}

द्वौक्षारौ टंकणांसूतंलवंगलवणा
त्रयं पिप्पलीगंधकंशुंठी मरिचंप-
लसंमितः॥७६॥ कर्षमेकं विषंदत्वा
सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् अर्कदुग्ध
स्यदातव्याभावनाःसप्तवासरं॥७७॥
अथपक्त्वागजपुटेस्वांगशीतंसमु
द्धरेत् तोलवंगमिरचंस्फटिकानां
पलंपलं॥७८॥सर्वसंमर्द्यसुदृढंदृ
ढभांडेनिधापयत् सोयंगुंजाद्वयं-
खादेद्भुक्तं द्रावयतिक्षणात्॥७९॥
पुनर्भोजनवांछाचजनयेत्यहरोप
रि आममांसंद्रावयतिश्लेष्मरोग-
निकृंतनः॥८०॥

अर्थ-सज्जीखार-जवाखार-सुहागा-पारा-लोंग-तीनोंनोन
पीपल-गंधक-आमलासार-शुद्ध-सोंठ-मिरच-ये प्रत्येकचा-
र२तोले सिंगियाविष १तोले इनसब का बारीकचूर्णकरइ-
सें आकके दूधकी सात भावनादेय पीछेइसको गजपुटमें
धर कर फूंकदे जबशीतल होय तब इसमें लोंग-कालीमिरच
और फिटकरी इनके चार२तोलेचूर्णकर इसे मिलावे पीछे
इसको अच्छे पात्र में भरकरधररक्खे रोगीको इसमें से २रत्तीखा-
नेकोदेयतो क्षणमात्र में भोजनको पचाय देय औरपहरभर
मेंही दूसरे भोजनकरने की इच्छाकरै और आममांसकोद्र-
रकरदे और कफके समस्तरोगोंको दूरकरै ॥८०॥

{इतिक्षारयोग॥०॥}

भुक्ते पथ्या भुक्ते पथ्या भुक्ताभुक्ते
पथ्या पथ्या॥ जीर्णेपथ्या जी
र्णे पथ्या जीर्णाजीर्णे पथ्याप
थ्या॥८१॥

अर्थ-भोजन करनेकेउपरांत हरड पथ्यहै क्योंकि अन्नके
पाचनकरने से भोजनके प्रथम भीहरडपथ्य है क्योंकि अ-
ग्निकोदीप्तकरै है और भुक्ताभुक्त कहिये भोजनके उपरांत
वमन होजाय तबभी हरड पथ्य है क्योंकी वमनके सबदोष
नाशकरताहै और अजीर्ण होनेसेभी हरड पथ्य हैपक्का-
शयको शोधनकरै है अजीर्णमें भीहरड पथ्यहै क्योंकिदीप

न होनेसें तथा जीर्णाजीर्ण कहिये कुछ न अन्न पचा हो कुछ
नहीं पचा हो उसमें भी हरड पथ्य है क्योंकि विषअन्नकोभी
पु पाक करता है ॥८१॥

कणाद्य चूर्ण

कणासिंधुशिवावह्निचूर्णमुष्णेन·
वारिणा पीतप्रातःक्षुधांकुर्य्यात्सा
वकस्यापि दीपनम् ॥८२॥ ॥

अर्थ· पीपल· सेंधानोन· हरड· आमले· चित्रक· इनका
चूर्ण प्रातःकाल तत्ते जलसें भक्षणकरैतो भूखको बढावे·
औरजठराग्निकोदीप्तकरै ॥८२॥

जीरकादिचूर्ण

जीरकरुचकशुंठीपिप्पलीतीक्ष्णावे
ल्लं सल्लवणमजमोदाहिंगुपथ्येति
कर्षं पृथगथपलमात्रास्यात्रिवृच्चू
र्णमेवाजननमुदरवह्नेः पाचनंरो
चनंच ॥८३॥

अर्थ· जीरा· संचरनोन· सोंठ· पीपल· कालीमिरच· वायविडंग
सेंधानोन· अजमोद· हींग· हरड· इनसब औषधों को तोले
तोलेभरलेय सबकूटकर चूर्णबनायलेय यह चूर्ण उदरकी
अग्निको बढावे पाचक और रोचकहै ॥८३॥

हिंग्वाष्टकचूर्ण

त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरके द्वे
समचरणधृतानामष्टमोहिंगुभागः
प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषा चूर्णमेत
ज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मंनि
॥ हंति ॥८४॥

अर्थ· सोंठ· मिरच· पीपर· अजमोद· सेंधानोन· दोनोजीरे
इनसबको समानभाग लेकर चूर्णबनावै परंतु इसमें हींग
घृतमें भूनकर मिलावे इस हिंग्वाष्टक चूर्णको भोजनके समय
प्रथमग्रासमें घृतकेसाथ मिलायकर खानेसें अग्निकोबढावे
और वायगोलाकोदूरकरै है ॥८॥

वह्निनामकरस

जाती जातं त्रिकर्षं मरिचमपिप
लं चार्धकर्षप्रमाणं गंधंसूतंल
वंगं विषमिदमखिलं चिंचणी·
रससतोये पिष्ट्वा माषैकमात्रा वि
तरति दहनं वह्निमाद्यं च सद्यो·
रोगानष्टौलानिलादीन्दहतिक
नगुणो वह्निनामा रसोयं ॥८६॥

अर्थ: जावित्री तोला१॥ जायफल तोला१॥ मिरच तो·४
गंधक· पारा· लौंग· सिंगियाविष· यसेकआधा तोला इनस
बको बांटिकपीसकर इसमें इमलीके रसकी भावनादेकरउड

दके बराबर गोली बनावे इसमें से एक गोली अनुपान के संग प्रा
तःकाल अथवा सायंकाल खाय तो मंदाग्नि का नाश होय था

बृहच्छंखवटी ॥

स्नुगर्कचित्रापामार्गरंभातिलपला
शजान् क्षारांश्च भिषगोदयापृथ
क् पलमात्रया लवणानि पृथक्
पंच धात्याणि पलमात्रया सर्जि
काचयवक्षारं टंकणं चितयं पले
सर्वैश्चयोदशपलं श्लक्ष्णचूर्णं विधा
पयेत् निंबूफलरसे प्रस्थसंमिते
तत्परिक्षिपेत् तत्र शंखस्य शक
लपलं वह्नौ प्रताप्य तु वारान्विर्वा
पयेत्सप्त द्रवति तद्यथा नागरंचि
फलं ग्राह्यं मरीचं च पलद्वयं पिप्प
लीपलमाना स्यात्पलार्धं भृष्टहिंगु
नः ग्रंथिकं चित्रकं चापि यवानी
जीरकं तथा जातीफलं लवंगं च
पृथक्कर्षद्वयोन्मितं रसगंधौ वि
षं चापि टंकणं च मनःशिला एता
नि कर्षमात्राणि सर्वं संचूर्णयेन्मिश्र
येत् शरावार्धेन चुक्रेण सम्यगेव

दिक्षा चैरेत् मापप्रमाणां भावयेद्बृ
हच्छंखवटीख्याता सर्वजीर्णप्रश
मनी सर्वशूलनिवारणी निश्च्य
लसकादीनां सद्यो भवति नाशनी

अर्थ- थूहर · आक · इमली · ओंगा · केला · तिल · ढाक · इन
सब क्षारों को चार २ तोले लेय · सांभर नोंन · कचियानोंन ·
कालानोंन · सेंधानोंन · समुद्रनोन · पांच २ तोले लेय · सज्जी
खार · जवाखार · सुहागा · यह सब ५२ वा पन तोले लेय · सब
को कूट पीस कर चूर्ण कर ६४ तोले नींबू के रस में भावना दे प
पीछे चार ४ तोले शंख के टुकड़े लेय उन्हें आंच में तपाय २
के ओ पात्र में बुझावे ऐसे सात बार वारने से संखकी भस्म हो
जाय तदनंतर सोंठ २ तोले · मिरच २ तोले · पीपल ४ तोले
भुनी हींग २ तोले · पीपलामूल · चित्रक · अजमायन · जीरा ·
जायफल · लोंग · यह प्रत्येक दो दो तोले लेय · पारा · गंधक
सिंगिया · विष सुहागा · मैनसिल · ये सब औषध एक २ तोले
लेय · इन सबको इकट्ठी कर १६ तोले चूका के रस में मि
लायकर गोली बनावे इसमें से एक मासे नित्य खाय तो अजी
र्ण · शूल · हैजा · अलसक इनको तत्काल नाश करे इसको
बृहत संखवटी कहते हैं ॥

अग्निकुमाररस

पारदं शुद्धगंधं च विषं चैतैस्त्रिभिः समं

कपर्देविषतुल्यांशं तत्तुल्यंस्वर्जि
काकरात्॥१॥ शुंठीचाष्टगुणायुक्ता
मरिचंमेलयद्बुधः मर्दयित्वाख
लेकृत्वापावत्सौकज्जलप्रभा॥२॥
जंबीरनीरैर्दैयाच्चभावनासप्तवैत
तः आर्द्रकस्यरसेनैवततः सिद्धंहि
गुंजकं॥३॥ रसस्त्वाग्निकुमारोयंआ
मसंचयजारुजं अग्निमांद्यमजीर्णं
चनाशयेत्कफहृत्परः॥४॥ ॥

अर्थ- पारा· गंधक· सिंगियाविष· यहसव बराबरलेय· कोड़ीकी भस्मतीनभागलेय· सज्जीखार· सुहागा· पीपल· ये १भागले· सोंठ ८ भागलेय· मिरच ८ भाग· इन्को खरलमें व हुत बारीककर नींबूकेरसकी सातभावनादेय· पीछे इसमें दोरत्ती मनुष्यखायतौ यहअग्नि कुमार रसआमकेसमू हको नाशकरै मंदाग्नि· और अजीर्ण कोदूरकरै तथा कफ को हरैहै॥४॥

अग्निदीपनी गोली

गंधकं मरिचंशुंठीसैंधवंयवजं
नवं निंबूरसेन वटिकाचराग्नाचा
ग्नि दीपनी॥

अर्थ- गंधक· कालीमिरच· सोंठ· सेंधानोंन· इन्द्रजो· बाय

विडंग· इन्केचूर्ण को नींबूकेरससैं चनाबराबरगोली बना वें इसगोलीके खानेसैं अग्निदीप्तहो अजीर्णनाश होय॥

महोदधिगोली

एकैकंविषसूतंचजातिटंकद्विकं
द्विकं कृष्णात्रिकंविश्वषट्कंदग्ध
स्याच्चकपर्द्दिका देवपुष्पंवाणमि
तं सर्वंसमधेयत्नतः महोदधिव
टीनाम नष्टमग्निंप्रयोजयेत्॥

अर्थ- शुद्धसिंगियाविष· १भाग· पारा १ भाग· जायफल२भा ग· सुहागा२भाग· पीपल३भाग· सोंठ६भाग· कोड़ीकीभस्म ६भाग· लोंग५भाग· इनसबकाचूर्णकरै इसकोमहोदधिव टीकहतेहैं यहअग्नि को बढातीहै॥

चित्रकादिचूर्ण

चित्रकोनागरंहिंगुपिप्पलीमूल
पीप्पली चव्यमजमोद मरिचंप्रत्ये
कंकर्षसंमितं स्वर्जिकाचयवक्षा
रःसिंधुसौवर्चलंविडं सामुद्रिकं
रोमकंचकोलमात्राणिकारयेत्॥
एकीकृत्वाखिलंचूर्णंभावयेन्मा
तुलंगजैः रसैर्वादाडिमैर्वापिशो
षयेदातपेनवा तच्चूर्णंनाशयेद्

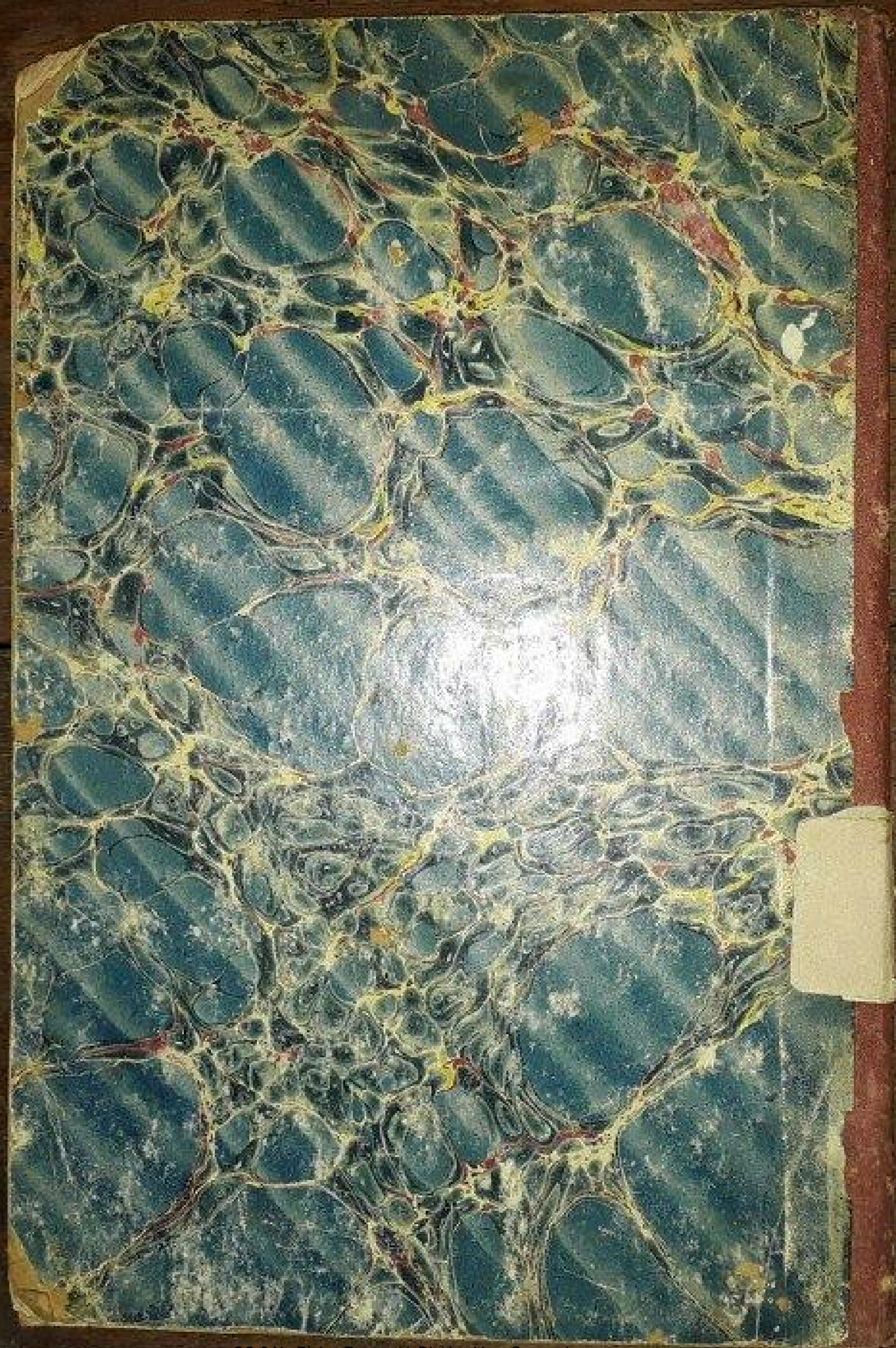
ल्मं ग्रहणीमामजं हन्ते अग्निंच कु
रुते दीप्तिं रुचिकृत्कफनाशनं ॥ ॥

अर्थ- चीता· सौंठ· हींग· पीपरिमूल· वच· अजमोद· मिरच
सब कर्ष २ भर लेना· दोनोंखार· सैंधानोंन· कालानोंन· समु
द्रनोन· सांभरनोंन· कचियानोंन· ये कोल कोल ले चूर्णकरि
बिजोरा के रसमें भावनादेकर घाममें सुखायलेय· यह चूर्ण
गुल्म ग्रहणी आमरोग हरै अग्निदीप्तकरै रुचिकरै कफनाश

॥ करै ॥

नवगुणनवचन्द्रवत्सरे पौषेशु
क्लदले ऽग्निसतिथौ सुरगुरौ
पुवासरे वरेषामापूर्ण मजीर्णम
॥ जरी ॥

इति अजीर्ण मंजरी ॥
समाप्तः
शुभं
हस्ताक्षर पण्डित केशव
देव शर्म्मा
इति



अजीर्णमंजरी

पण्डित

दत्तराम माथुर कृत ॥

हस्बफ़रमायशलालादेबीदासजी

खत्रीके

लाला बलदेवप्रसाद साहबअर्जी

नवीसाबक

के

मकान में काशीसमाननिजशिला

यंत्रमें ॥

लाला हरप्रसाद के प्रबंध से छपी

सम्वत्

१९४०

सन्

१८८३ ई०

श्री

श्रीरामवन्दे॥

श्रीनिकुञ्ज विहारिणे नमः

धन्वंतरिं धृतकरामृतपूर्णकुम्भं
पीताम्बरं सकल सिद्धसुरेन्द्रवं
द्यं वंदेरविन्दनयनं मणिमाल्य
मायुर्वेदप्रवर्त्तकमनुस्मृतिरोग
नाशम् १

अर्थ- यणहै अमृत कापूर्णकलश हाथमेंजिन्नेपीताम्बरके धारण करनेवाले- सब सिद्ध और सुरेन्द्रकरकें वंद्यकमलसेनेत्र मणिकीमालाके धारण करनेवाले आयुर्वेद वैद्यविद्याके प्रगटकरनेवाले- तथास्मरणमात्रसैंहीरोगोंको नाशकरैं ऐसें से श्रीधन्वंतर भगवान्कोहमग्रंथकी आदिमें नमस्कारकरतेहैं

राधिकारमणंनत्वा श्रीवृन्दावन
चारिणं दत्तरामःप्रकुरुतेह्य
जीर्णमंजरीम्॥२॥

अर्थ- श्रीवृन्दावनविहारी राधिकारमणकोनमस्कारकर दत्तराम श्रेष्ठहै प्रयोजन जिसका ऐसीइसअजीर्णमंजरी की रचनाकरैहैं २

यतस्सर्वेषुरोगेषु ह्यजीर्णंकारणं

स्मृतं ततस्तस्यनिदानंचकथ्यते
पूर्वसंमितम्॥३॥

अर्थ- सबरोगों का कारण अजीर्णरोगको कहतेहैं क्योंकि जबअन्नकापरिपाक यथार्थनहीं होयतबतक अनेक ज्वरादि दुष्टरोग इसमनुष्यको संतापित करतेहैं इसीहेतुसें अजीर्णरोगका पूर्वाचार्योंके संमत निदानको कहतेहैं अजीर्ण रोग होने का कारण मंदाग्निहै मंदाग्निके होने से ही अजीर्णरोग होयहै॥३॥

अजीर्णरोगकीउत्पत्ति

अत्यंबुपानाद्विषमाशनाद्वा
संधारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च का
लेपिसात्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नं
नपाकंभजतेनरस्य ॥४॥ · ॥

अर्थ- बहुत जल पानेसें कुसमय भोजनकरनेसें मल मूत्र आदि वेगके रोकनेसें दिनमें सोनेसें रात्रिमेंजागनेसे अथवा भोजन के समय निरंतर लघुभोजनकरनेसें ऐसें मनुष्य के अच्छीरीति सें अन्न नहीं पचैहै ॥४॥

ईर्ष्याभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धे
नसुग्दैन्यनिपीडितेन प्रद्वेष
युक्तेनचसेव्यमानमन्नंनसम्य
क् परिपाकमेति ॥५॥

अर्थ-ईर्ष्या-भय-क्रोध-इनके आठ पहर करनेसें लोभशोक दीनता इनके करनेसें तथा आठपहर वैरके रखनेसें मनुष्य के भोजनकरा अन्नअच्छी रीतिसें नहीं पचै है ॥५॥

भुक्तान्नं पाचितं नैव वह्निनोदरजेन
तत् तस्योपरि पुनर्भुक्तमजीर्णं
तं विदुर्बुधाः ॥६॥

अर्थ-मंदाग्निसें प्रथम भोजनकरा अन्नतोपरि पाक भयान हो पर उसकेऊपरफेर भोजनकरै उसेअजीर्णरोगकहतेहैं।६

अजीर्णकेभेद

आमं विदग्धं विष्टब्धं कफ पित्ता
निलैः त्रिभिः अजीर्णं केचिदि-
च्छन्ति चतुर्थं रस शेषतः ॥७॥
अजीर्णं पंचमं केचिन्निर्दोषं वदि
न पाकि च वदन्ति षष्ठं चाजीर्णं
प्राकृतं प्रति वासरम् ॥८॥

अर्थ-कफ पित्त और वायु ये तीन दोषोंसे क्रमपूर्वक आमविदग्ध और विष्टब्ध ऐसें तीनप्रकारका अजीर्णहोय है और कोई आचारी कहतेहैं कि आहार रसके शेषरहनेसे चतुर्थ अजीर्ण होयहै और रात्रिदिनमेंजो आहार पचै उसको निर्दोष पांचवां अजीर्णकहतेहैं औरजोनित्यरहै उसको प्राकृत अजीर्ण छठवां कहतेहैं ऐसें अजी

र्णरोग छः प्रकारकाहै परंतु मनुष्य अजीर्ण रोग चार हीप्रकार काहैं सो ग्रंथान्तर में लिखा भीहै + यथा +

अजीर्णप्रभवा रोगास्तदजीर्णं च
तुर्विधम् आमं विदग्धं विष्टब्धं र
सा जीर्णं चतुर्थकम् ॥९॥

अर्थ-मनुष्यों के अजीर्ण होनेसे रोगप्रगटहोतेहैं सो अजीर्णरोग चार प्रकार के हैं आमा-विदग्ध-विष्टब्ध-रसाजीर्ण-ऐसें चारप्रकारकेहैं।९॥

आमादिक अजीर्णके ल॰

तत्रामे गुरुतोत्क्लेदः शोथो गंडा-
क्षिकूटगः उद्गारश्च यथा भुक्तम
विदग्धः प्रवर्तते ॥१०॥

अर्थ-तिन में आमाजीर्णमें देह का जड़होना छोट-गाल-और नेत्रइनमें सूजन-डकार का आना-और जैसा अन्न खायतैसाहीदग्धभागीहोकार उकले उसेआमाजीर्णकहतेहैं

विदग्धाजीर्णके ल॰

विदग्धे भ्रमतृण्मूर्च्छाः पित्ताच्च
विविधारुजः उद्गारश्च सधूमा
म्लः स्वेदो दाहश्च जायते ॥११॥

अर्थ-विदग्ध अजीर्णमें भ्रम-प्यास-और मूर्च्छा-येहोतेहैं और पित्तसें अनेक प्रकार के रोग प्रगट हो धूमखट्टी

डकार आवे पसीना आवे तथा दाह होय ॥११॥

विष्टब्धाजीर्णकेलक्षण।

विष्टब्धेशूलमाध्मानं विविधावा
तवेदनाः मलवाताप्रवृत्तिश्च
स्तंभो मोहोंऽगपीडनम् ॥१२॥

अर्थ विष्टब्ध अजीर्णमें शूल पेटका फूलना अनेक बातसे पीडा मल और अधोवायु की अप्रवृत्ति कहिये बंद होजाना देहकाजकडजाना मोह और अंगोंमें पीडा ये लक्षण होते हैं १२

रसाजीर्णके लक्षण ॥

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवे

अर्थ रसशेष अजीर्णमें अन्नमें अरुचि हृदयमें भृष्टता और शरीर का जड होजाना यह लक्षण होते हैं

चारोंअजीर्णमेंसामान्य
उपचार

आमेचोष्णोदकंपेयं दग्धेचोदर
स्वेदनम् विष्टब्धेरेचनंचैवशय
नं रस शेषके ॥१३॥

अर्थ आमाजीर्ण में तप्तजलपीवे विदग्धाजीर्णमें पेट को स्वेदनकरे विष्टब्धाजीर्णमें रचलेना और रसशेष अजीर्णमें शयनकरनाचाहिये

॥१३॥

अजीर्णपाचन होनेके
दिवस

घृताजीर्णेदिनाः पंच तैलेह्वाद
शकस्तथा तिथिसंख्या पयस्
क्राद्धिवा विंशति स्मृता ॥१४॥

अर्थ घृतका अजीर्ण पांचदिन पचताहै तेलका बारहदिन में दूधका पंद्रह दिनमें दहीबीस दिनमें पचताहै ॥१४॥

आमान्नेसप्तरात्रेण दधिशोडष
भिस्तथा क्षीरंविंशतिभिर्ज्ञेयं मां
सं मासेन पच्यते ॥१५॥

अर्थ आमाजीर्ण सातरातमें दही सोलह दिनमें दूधबीस दिनमें और मांस एक महीनामें पचताहै ॥१५॥

उष्णोदकं घृताजीर्णे तैलाजीर्णे
चकांजिकं गोधूमे कर्कटिश्रेष्ठा
कदल्याम्रफलेघृतम् ॥१६॥

अर्थ घृतके अजीर्ण में गरमजलपीना हितहै तेलकेअजीर्णमें कांजीपीवे गेहूंके अजीर्ण में ककडीखाय और केला तथा आमके अजीर्ण में घृतपानकरै ॥१६॥

नालीकेरफलेषुतंदुलजलंक्षीरं
रसालेहितं जंबीराम्लरसोघृतेस
मुचितः सर्पिस्तुमोचाफले गोधू

मेषुचकर्कटी हितनमा मांसाद
ने कांजिकं नारंगे गुडभक्षणं च
कथितं पिंडालुके कोद्रवम् ॥१७॥

अर्थ- नारियलगिरी खानेसे प्रगट अजीर्णमें सुद्ध चांवलों का धोया हुआ जल पान करना हित है- आम केचूसनेसें प्रगट अजीर्णमें दूधपान करै- इनके अजीर्णमें जंभीरीका रस पीवै- केलाकी फलीके अजीर्णमें घृतपान करै/ गेहूं के अजीर्णमें ककड़ी पथ्य है- मांसभक्षण अजीर्णमें कांजीकापान करै- नारंगीके अजीर्णमें गुड़ खाना चाहिये- आलूके अजीर्णमें कोदों अन्न भक्षण करना चाहिये॥१७॥

पिष्टान्नेसलिलंप्रियालफलजेप-
थ्याहिताभासजे खंडंक्षीरभवेतुल
कं भुंचितं कोष्मांबुकालिंगजे म
त्स्यं चूतफलंत्वजीर्णशमनं मध्वंबु
पानात्पयेतैलंपुष्करजेकटुपशम
नं शेषांस्तुबुध्याजयेत ॥१८॥

अर्थ- पिष्टान्न अर्थात रोटी पूरीके अजीर्णमें जलकापीना हित है- खिरनीके अजीर्णमें हरड़ खाना चाहिये- तरसके अजीर्णमें खांड हित है- दूधके अजीर्णमें छाछ पीना हित है- तरबूजके अजीर्णमें तत्ताजल पीना चाहिये- मछलीके अजीर्णमें आमको चूसना चाहिये- मद्यके अजीर्णमें सहत युक्त ज

लपान करना चाहिये- कमलबीज खानेके अजीर्णमें सरसोंका तेलपान करना चाहिये और शेष अजीर्णोंको वैद्य अपनी बुद्धि से दूर करै॥१८

पनसे कदले कदले च घृतं घृत
पाकविधावपि जंभरसः तदपह
वशांति कारं लवणं लवणेपि
च तंदुलवारि परम् ॥१९॥

अर्थ- कटहर के अजीर्णमें केलाकी गहर खाना अच्छा है केलाकी गहर के अजीर्णमें घीखाना घृतके अजीर्णमें जंभीरीकारस जंभीरीरस अजीर्णमें नोन नोनके अजीर्णमें सुद्ध चांवलोंका धोवनका जल पीना चाहिये॥१९॥

नारिकेलिफलतालमूलयोः पा
चनेयदुहतंदुलंविदुः तेवदं
त्रिसुनयोपि तंदुलानि क्षीरवारि
परिपाचयस्त्यपि ॥२०॥

अर्थ- नारियलको गिरी खानेके अजीर्णमें- तथा तालफल- मूली- इनके अजीर्णमें चांवलोंका धोवन पीना हित है- और चावलोंके अजीर्णमें दूध और पानी पीना अच्छा है

दाडिमामलकतारस्नतिंदुकीबी-
जपूरलवलीफलानि च वाकु-
लंफल मतीवपाचयेत्पाकमेति

बकुलं समूलतः॥२१॥

अर्थ· अनार· आमले· तालफल· तिंदुकीविजोरा इमली इन्के अजीर्णमें मौलसरीके फलखाने चाहिये· मौलसरीके अजीर्ण में मौलसरीके जड़को खानेसे पाचनहोयहै॥२१॥

माधूक मालूर नृपादपानांपरू
षकखर्जूरकपित्थकानां पाकायपे
यंपिचुमंदबीजंसिद्धार्थकोहंतिच
बीजपूरम्॥२२॥

अर्थ· महुआ· बेलफल· खिरनी· खजूर· फालसे· इनकेअ
जीर्णमें· नीमके बीज को जलमें पिसके पीना चाहिये और
बिजौरे के अजीर्णको सरसों नाश करे॥२२॥

आम्रातकोदुंबरिपिप्पलीनांफ
लानिचप्लक्षवटादिकानां वि
श्वौषधंपर्युषितोदकेनसौवर्च
लेनाम्रफलस्यपाकम्॥२३॥

अर्थ· गूलर· पीपल· आम· पाकर· बड· इनकेफल खा
नेसे अजीर्णमें बासेपानी में सोंठ पीसकेपीना योग्यहै
और आमका अजीर्ण सेंधालोणसे होताहै॥२३॥

मृणालखर्जूरकहारशृंगाटकशर्करागांपथ्याविपाकायचभद्
मुस्तंतथास्तोनेषुचभद्रमुस्तम्॥२४॥

अर्थ· कमलमूल अर्थात् भसेंडा· खजूर· मुनका· कसेरू
सिंघाडे खांड इनसबका अजीर्ण नागरमोथा नाशक है·
और लहसनका अजीर्ण दूधपीने नाश होय॥२४॥

गोधूममाषौहरिमंथमुद्गौयवांस्
तीनोकितवौनिहंति यन्मातुलु
गीफलमेतिपाकंक्षराो नसोथंल
वणानुभावः॥२५॥

अर्थ· गेहूं उड़द चना मूंग जो मटर इनका अजीर्ण·
धतूरेके रससें नाशहोताहै और बिजोरेका अजीर्णसेंधे
नोनसे नाशहोताहै॥२५॥

सौवीरंफलमुष्णवारिहन्यात्प्रा·
चीनामलकंचराजिकैका खा
र्जूरंचपरूषकं पियालंतैलंता·
लफलेपचेन्मरीचम्॥२६॥

अर्थ· बेरके अजीर्णको उष्णजल नाशकरै प्राचीनआ
मलेके अजीर्णको राई दूरकरै· छुहारा· और फालसेके
अजीर्णको तथा खिरनीके अजीर्णको तेलखाना हित
है तालफलके अजीर्णको मिर्चे दूरकरै॥२६॥

नागरंहरतिबिल्वजांववंपाच
येन्मधुरिकाकपित्थजं सर्वथैव
तकालामयहंचीप्रीतयेग्निजन·

नीगदितासा ॥२७॥

अर्थ- बेलफल जामन के अजीर्णकोसोंठ पचातीहै कैथके अजीर्णको लोध पाचनकरै यहविशेषकरकेस वैद्याधीनाशकरै अग्निदीप्तकरै ऐसीकहीहै २७

पनसामलकीफलपक्षपेभजत सर्जतरोश्चवीजकं सकलमप्यु दितंनुदिनंफलंप्रभवतिप्रस्तव कथिकच्छुजम् ॥२८॥

अर्थ- कटहर आमले इनके अजीर्णमें सर्जतरुकेबीज भखणकरै और किसीफल का अजीर्ण होतबमेकौंच के बीज खाना हित है ॥२८॥

पिशितपनशयोःस्यादाम्रबीजे नपाकः कृशरमहिषपयोषिस्वीर यो सैंधवेनचिपिटपरिणतिःस्या त्पिप्पलीदीप्यकाभ्यामपहरति तुषांबुर्हृदलानामजीर्णं॥२९॥

अर्थ- मांस और कटहरका अजीर्ण आमकी गुठलीसे नाशहोय उड़द तिल चावल इनकोमिलाने कृशर अर्थात खिचड़ीसे होतीहै ऐसेभैंसकादूध इनदोनों कापरिपाक सेंधेनोनसे होताहै और चिरवाकाअजीर्ण पीपरऔरअ जमायनसें नाशहोताहै तथादालकाअजीर्णमैंगनर

दआदिकाअजीर्ण कांजी सें नष्ट होता है ॥२९॥

कर्पूरपूगीफलनागवल्लीकाश्मी रजातीफलजातिकोशं कस्तूरि काशेलुकनालिकेरफलंपचत्या शुसमुद्रफेन ॥३०॥

अर्थ- कपूर सुपारी तांबूल केशर जायफल जावित्री क लरी बहेड़ा नारियल इनका अजीर्णसमुद्रफेनपचाताहै३०

श्यामाकनीवारकुलत्थषष्टीनिष्पा वकंगूदधिमंद्रकस्तु चिंचाकुल स्यौतिलतैलयोगोजटाब्दनाद स्यनिहंत्यपाग्रम ॥३१॥

अर्थ- सामखिया तिन्नी कुलथी साठीचांमल वनमूंग कांगनी इनका अजीर्ण दहीके मठासें नाशहोताहै इम ली कुलथी इनकाअजीर्ण तिलके तेलसे दूरहो आम का अजीर्ण चौलाईकीजड़ सेनष्टहोयहै ॥३१॥

कसेरुशृंगाटमृणालमृद्वीरखर्जूर खंडाश्चपिनागरेण पलासभस्मा घृतथारजोवारसोनिहंत्याद्रसमि क्षुजानां ॥३२॥

अर्थ- कसेरू सिंघाड़े कमलका कंद दाख खजूर खांड़ इनकाअजीर्ण सोंठसेनाशहोताहै पोंड़ा गंडाकाअजी